

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

रुद्रमसूत्रमय २ सचन ध ग का
 नंदं दुखादा ॥ ~~नंदं दुखादा~~ ॥
 नमः ॥ ॥ यनाम सय प्रव
 नाचमदितं गीतं दसमाकृतं
 कोमिकु उषिदिह कायनयन
 बोध्यक्रियालुपना आधतक
 मकचिह्नकनधं प्रहासूनको
 कता अतायावमिताकरवल
 रुतं कला मयिसुल रुवतु
 कतकवत्स सचं गोविमुक
 रुद्रमनूज विमित प्रवदो
 यिकानि धनकनकसमृद्धि
 यतं नाज वं नमगय वगृही
 सिंकाशकमोदिह का ॥ ॐ म
 नं सचन ध ग का धिहितं

लाहा ॥ चन्द्रनाकततामृनादि
 मयुलैतयय ॥ ॥ ॐ चन्द्रार्क
 विसलैलाहा ॥ निमित्रकावय
 ॥ ॥ ॐ वरुसुखसचविष्णुः
 नसावहं ॥ मयुसनिविष्णु ॥
 ॐ सचन ध ग क स व ह धा न सा
 दा ॥ पितवासे नमयुन सयय
 ॥ ॥ रुद्रधानं ॥ मरुधिलित
 रुद्रिमधय कानादि वरुच
 ऊमं यतं मदा रुतं वा य विज
 लावनि मयुय विरुका नरुध
 नमयुने सिंहासनस्थितं यम
 चयु श्रीवज्रसुखदिरुजं रुद्र
 खं युज्ये नृवज्रवज्रयं धनः
 विविगरु न धा मित्र मित्र

कनायनमशा नमाव्वायगुन्य
ममधमाय तात्रा नमसंसा
यमरुहमनिखायिसुतनमः
सचवृद्धनमस्यामिधमाकजिः
नरुधितं। संयकमीलसेपन
नरुयममनदी। सचयतिदि
ममयमनमा यजगत्यर्थ। वृद्ध
वा। सोदधमनमा। वा। सोदध
यामिवृद्धधमग। मरुमं ॥ वाः
लोचिहकनामयस्यपनार्थयः
सिद्धम। उत्यादयामिजनमैवः
लवाधियिरु। वृद्धारुवयं दम
नासचयायान्ता यून्यानामा
दना कृणायवासंवलियासिजा
य्याहाधियायदु ॥ ॥ कताव
लिंदयत ॥ ॥ उं अकानमूय
सचधमाता मायनृत्यनत्ता उं

आः चमनंयतिवृत्तादा ॥ ॥
खानवाय ॥ ॥ उं उं उं उं उं
दा ॥ उं यमायसादा ॥ उं वृद्ध
यसादा ॥ उं कृवनायसादा ॥ उं
अग्रयसादा ॥ उं नेमत्यायसा
दा ॥ उं वायवसादा ॥ उं उं उं
नायसादा ॥ उं वृद्धादा ॥ ॥
उं सूर्यायसादा ॥ उं उं उं उं
दा ॥ उं यथिरोसादा ॥ उं नागः
सादा ॥ उं अमनयसादा ॥
उं सचदि। मकयानयसादा ॥
॥ यूजासाया यं ॥ वादनमुति
॥ उं उं उं उं उं उं उं उं उं
मददिका। दमदिहसितादवा
साकयानंतमाम्मद ॥ ॥ कताः
न ॥ कमायनशा उं कतावसच
सत्तार्थसिद्धिंदत्ताथानमा ॥

गच्छध्वं वृद्धविषयं यत्तु नायगम
 नायव ॥ ॥ विसर्जनं ॥ ॐ श्रीः
 ईश्वरमयुतंगमदा विसर्जनं ॥
 ॥ श्रीसिद्धोद ॥ यन्निह तयनिक
 ल्य निमज्जं हतधर्मं सरुवतुरु
 गवां श्रीयं श्रीवज्रसत्त्व ॥ ॥
 ॐ तियुनमयुलं समाक ॥ ॐ ॥
 धनसिद्धनयुजा जायं कृष्यात् ॥
 ॥ श्रीकृष्णदि यमं न्यामेश
 श्रीवज्रवात्राहिरुदात्रस्य यायं य
 रिच्छसाहा ॥ ॥ ॐ वं वज्रवात्राही
 यसाहा ॥ ॐ हायां यमिही यसाहा
 हा ॥ ॐ हां मां माहृतीय साहा ॥ ३
 ॐ हां हां संताम ही यसाहा ॥ ॐ हां
 हां संताम ही यसाहा ॥ ॐ हां हां
 हां संताम ही यसाहा ॥ ॐ हां हां हां
 हां संताम ही यसाहा ॥ ॥ यज्ञा साहा
 ताहा ॥ ॥ नलां श्रीवज्रवात्राही

सचयाय समावति । मासविधं स
 लीदेवी वृद्धत्वं रुतदायधी ॥ ॥
 धनउज्जमातसो ज्ञाय ॥ श्रीमः
 तनके वाकं य ॥ ॐ ॥ ॥ सुरुः
 समयुतं कृष्यात् ॥ ॥ तावय ०
 ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ त्रहस्यं दयात् ॥ ॥
 किं समाधिं कृष्यात् ॥ वायव्य
 ॐ नमः श्रीवज्रसेवनाय ॥ ॥
 ॐ श्री १०० श्रीमद्वज्रसद्वज्रवल्लभः
 वदाकमनाय संमय कृष्णावल्लभ
 सनं कनाय नमः ॥ ॥ वद्वरु
 वाधिसमन संतप्रधीयै । सुरुः
 यत्तुमादन ममाय हतसंरुवम
 श्रीमंत वज्रकायजकिही जकव
 किं न यं वहातं रिताया यज्ञा
 यज्ञातं नमः राया वक्र वज्रज
 किं न स्थित संकल्पवदना ॥ ॥

इत्यादि तत्र क नरे नरे निगो विन्दु निगो रासाद वक्षः त्रिगत यो विक्रमना वृद्धसना साधना

विलाविखलाका लया विवात्रमार्थ
 श्रीवज्रवात्रादिदि यमं न्याय

काकलः १५ वलिन्त्य सुवलिथान
मः सदा ॥ ॥ उस्वरावधुसः
वधुमास्वरावधुसः ॥ वलिथान
कात्रधुन्यगारावधुश्रीकात्रमः
यस्मिन् रुकात्ररुवजिर्नका
नस्यनासाथ ककात्राकात्रिर्न
किर्न सर्वसत्वाधनदरुका
कात्ररुदिर्नकात्रात्मानेलेय
॥ ॥ तदनकल (मधनः) ॥
दकिर्न रुकात्राकात्रास्यमः
मुले ॥ वासुकात्राकात्रावत्
मधुले ॥ ॥ उवजयथा रुका
॥ ॥ उरुनमलिखा रुका
वट रुका रुका रुका रुका ॥
उवलायां कीर्मा कीर्मा रुका रुका
रुका ॥ ॥ उरुका रुका रुका ॥
रुका रुका ॥ ॥ ० ॥ उवजसत्

संयत्तसक वज्रवत्तमनूतने ॥
वज्रधर्मगणि (वज्रकर्मकलाः
रुका ॥ ॥ वज्रथानि ॥ उरु
किर्न रुका रुका ॥ ॥ मधुनथि
य ॥ ॥ उरुका रुका रुका रुका
रुका रुका रुका रुका रुका ॥
॥ मधुनथि ॥ उरुका रुका रुका
रुका ॥ ॥ यत्तसत्तथि ॥ उरुका
यत्तसत्तथि ॥ ॥ धर्मनथि ॥ उरुका
वज्रधर्मनथि ॥ ॥ मधुनथि ॥
उरुका रुका रुका रुका रुका ॥ ॥ वलि
सत्तसत्तथि ॥ उरुका रुका रुका रुका
धर्मनथि ॥ मधुनथि ॥ उरुका रुका
रुका रुका ॥ ॥ तदनमधुनथि ॥
मधुनथि ॥ मधुनथि ॥ मधुनथि ॥

कंका लघकदा न मां काले वा नृपो
अश्रुदम रूपा चक्रे मया विभवा य
भवानो कर्म मय कया न कलि म ध्वं
अशा तथा गज तथा घं ॥ नव मेल व
लयदा रुटका धन्या भी व खड्गो गः
सक मंड ॥ भूल मूल सुवो भी वः
गद्यय किवा क प्रकल नव जो व न
संयन्ता भूय ता रुरु मंदनी ॥
निका धाय ॥ ॐ अ ॥ ॐ रु ॥
कादि ॥ अयं तास ॥ ॐ अ म न र म
मदा सं रु व न रु दि अ म रु य व म
अ ॥ ॐ ॥ रु का न रु ल न व न रु ल
का व ग र्ध ना म किं का न वी य रु
का व अ म ता काल लु स व न ॥
खला व रु च ॥ खान वाय ॥ ॐ न
मारु ग व न वा नृमी द वी अ म न र
कां तास ॥ अ ॥ ॥ पूजा गो

॥ नो न नो सां व न नो नो जं का य
मंघ संगी गो रु रू रुं ता म स वा व
म का यो रु व मा म की ॥ ॥ अ म र्ध
क या ता ॥ ॥ यं मि न मि जी मि वाः
यो ॐ दे हि न क रु अं य वृ व ग म
वाम क रु नो रुं म ध यो दं व रुः
॥ १ मां वा रु म रु या १ कां रु रु या १
डे रु रु द रु १ रुं न रु को का ना मि
का रु कं व रु नं रुं ० का रु दि रु
म रु पि रु नं म रुं रु न रुं मं रु न
द रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
य रुं मं रु रु रु रुं रु रु रु रु ॥ ॥ वी रु
यी ० य यी ० रु रु य रु रु रु रु रु रु रु
य रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
मा रु रु ॥ ॥ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
१ रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु
रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु रु

[illegible]

ऊ. प्रादयात्री व्यावर्ज वक्रनागः
 वक्र सम्य (म) मां सम्य वेज सचा
 यरुनेषने धन्य वेज यथिविः
 धातुयातनि आयधातुमानदीः
 तजा धातुना कषधी वायुधातुः
 यज्ञनरुधनी आकाशधातुयः
 दक्षानिधी ॥ ॥ यूनताजालि
 कालिवकिम (ध) ने कालेष्टसू
 र्यमयुतं तमाध्रुकात्रयनिः
 धामत रुगवर्तकसुवर्त यः
 दुजयथमरुजाखी वक्र २ यध
 धने ॥ द्वितीयरुजाखी वक्र तर्ज
 धीयाध रुतियां उमनृयद्वीधः
 चक्रमुखं रुसुस्यामनकपीतः
 काकास्याः रुसु डनूकास्याः धमः
 मा धनास्यानका सुवनास्यापी
 नायमदादी रुसुपीता यमदः

अ२ म२ रु२ द२ रु२ ॥ उं को२ रु२ यं२ क२
ल२ रु२ रु२ ॥ उं सो२ रु२ य२ गा२ रा२ न२ रु२ रु२
॥ ॥ तदा२ रु२ व२ रु२ का२ (ध) ॥ उं सो२
र२ व२ क२ वा२ ग२ रु२ रु२ ॥ उं दा२ रु२ य२ रु२ ला२
रु२ रु२ रु२ ॥ उं को२ रु२ सो२ रु२ नि२ नी२ य२ रु२ रु२
॥ उं रु२ रु२ रु२ रु२ व२ रु२ म२ धी२ य२ रु२ रु२ ॥
॥ तदा२ रु२ व२ रु२ दा२ व२ ॥ उं कि२ नि२ रु२
म२ वि२ ल२ रु२ रु२ ॥ उं मि२ नि२ रु२ म२ सा२ व२
ल२ रु२ रु२ ॥ उं धि२ नि२ रु२ रु२ व२ रु२ हि२ धी२
य२ रु२ रु२ ॥ उं दि२ नि२ रु२ म२ सा२ वी२ य२
रु२ रु२ ॥ ॥ तदा२ रु२ व२ को२ रु२ (ध) ॥
उं का२ का२ म२ रु२ रु२ ॥ उं उ२ न२ का२
म२ रु२ रु२ ॥ उं सा२ ना२ म२ रु२ रु२ ॥
उं म२ क२ ना२ म२ रु२ रु२ ॥ ॥ तदा२ रु२
व२ रु२ दा२ ल२ ॥ उं य२ म२ दा२ री२ य२ रु२ रु२
उं य२ म२ द२ की२ य२ रु२ रु२ ॥ उं य२ म२ द२
रु२ नी२ य२ रु२ रु२ ॥ उं य२ म२ म२ थ२ नी२

य२ रु२ रु२ ॥ ॥ तदा२ रु२ व२ रु२ का२ (ध) ॥
उं व२ (ध) य२ सा२ य२ रु२ रु२ ॥ उं ग२ रु२
ना२ य२ रु२ रु२ ॥ उं हा२ ली२ के२ ना२ य२ रु२
रु२ ॥ उं के२ ले२ क२ री२ व२ ना२ य२ रु२ रु२
॥ तदा२ रु२ व२ रु२ दा२ व२ ॥ उं म२ रु२ दा२ मा२
य२ रु२ रु२ ॥ उं स२ म्मी२ व२ रु२ रु२ ना२ स२
ना२ य२ रु२ रु२ ॥ उं धा२ ना२ ध२ का२ ना२ य२
रु२ रु२ ॥ उं कि२ सि२ क२ ना२ स२ व२ रु२ रु२
॥ ॥ यू२ का२ ना२ सा२ ना२ रु२ ॥ ॥
उं व२ रु२ वी२ य२ रु२ ॥ उं व२ रु२ ना२ मा२
ना२ ॥ उं व२ रु२ म२ द२ (ग) की२ ॥ उं व२ रु२ म२
न२ अ२ म२ ॥ उं व२ रु२ दा२ स२ रु२ ॥ उं व२ रु२
ना२ स२ रु२ ॥ उं व२ रु२ गी२ रु२ की२ ॥ उं व२
रु२ न२ य२ म२ ॥ उं व२ रु२ य२ य२ रु२ ॥ उं
व२ रु२ धू२ य२ रु२ ॥ उं व२ रु२ ना२ ना२ रु२ ॥
उं व२ रु२ ग२ (ध) म२ रु२ ॥ उं व२ रु२ द२ (ध) रु२
उं व२ रु२ न२ स२ रु२ ॥ उं व२ रु२ य२ स२ रु२ ॥

ॐ वज्रधर्म ॥ नमस्तु नमः
मिह नमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वज्र ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ नमस्तु श्रीवज्रसेवनाय ॥ सर्व
हृत्तमस्तु जगदर्थयसाधकः
चिन्तामयी वीरुत श्रीसंवलंत
मामुत ॥ याकविश्वमेसाहनः
सचासदिसदासुतां कृपाकाः
धमसावोद श्रीसंवलंतमामुत
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गवतवीलवीलमायकुरु ॥
ॐ मदाकराग्निसंनिरायकुरु
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लीयतामखायकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सहस्रजगत्सनायकुरु ॥ ॥
ॐ नमस्तु नमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नखदांगकालि ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नमस्तु वायुजिनामवलधनायकुरु
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
थकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
प्रकृत्य ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वं वज्रवानाथकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यामिदीयकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दीयकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
दीयकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
यामिन्यायनमस्तु रुगवती
संवाली दीसर्वदा ॥ संजामिन्यत
थायनसुविमना यागन्धवीच
रिका ॥ वलावाकुरु मकलादन
मयी नीलागिता ॥ गोली ॥ ॥ ॥
माकुरु सततं वन्द्ययदंता ॥ ॥ ॥

त्यादरुंगनदिता वलददधुनी
 नकुयराविकुयिनीचकुधुः
 नूयी। वजांगदायुदागा। दोसम
 लंकतांगी मखं च्यामिसुतकः
 जनहीजिदानी ॥ ॥ ॥ ॥
 उंनमारुगवतिवजवावाहीरु
 रुट ॥ उंनमारुगवतदंभूय
 नाजितकेलायसातत्ररुट ॥
 उंनमारुगवतसर्वरुतरुया
 वरुसदावजुहूट ॥ उंनमाः
 वजासुतजजितभूयनाजितः
 वसंकनीनरुगामितरुट ॥
 उंनमात्रावती। भाषमीकाधः
 निकलासिनीहूट ॥ उंनमाः
 संजासिनिमासिनीसपुरुदिः
 नीयनाजिनीहूट ॥ उंनमाः
 जयविक्रयजुनीतहमीमारु

निथहूट ॥ उंनमावजीनीः
 वजवावाहिदेवजागीधीकास
 धनीखागधनीयहूट ॥ ॥
 तदन्यायदभना ॥ ॥ उंनः
 तकाविक्रयनूमादित मयमः
 खिलनीहिरुदायानां येतिदभ
 यामि पुनतापुननकसेवसः
 विदधधवकखमजिनारुनः
 जितसुतसंरुगानिकुभनाति
 जमादितानि वा। भोसंम्यवय
 निताभया भयत्रतजितरुय
 भननयागतासिं सर्वरायन
 वा। भोविरुवीन। धननरुतमा
 न्नतथासुयः ॥ ॥ ॥ ॥
 समयसलंरुनमलंरुकितासि
 कविक्तिंरुयत ॥ ॥ ॥ ॥
 मलंरुयनराय ॥ ॥ ॥ ॥

रुमां सर्वतथागतारिषकस्म
 यमिह ॥ अरिभयं सदावर्जं
 अरुकनमस्तुतायमाकं यजना
 थायमकृतयं वरुना रुवं ॥ ॥
 सिनसवजनधिय ॥ ॥ उं सर्व
 वृद्धवज्रमहिमसामं कृतं यतिः
 च सादा ॥ ॥ यं च मृदाकन ॥ ॥
 उं वं भक्तवती अरिषिं वरुं ॥ उं
 सत्त्ववकी अरिषिं वरुं ॥ उं नत्त
 वकी अरिषिं वरुं ॥ उं धर्मवकी
 अरिषिं वरुं ॥ उं कर्मवकी अ
 रिषिं वरुं ॥ ॥ ध्यात ॥ ॥
 अथारिषिं रुतामसि वृद्धवः
 कारिषकत ॥ ॥ उं दं सर्ववृद्ध
 त्वं गृहवर्जं मसिद्धया वजाधिय
 तिलामरिं विवामि वरुनामाः
 रिषकत ॥ उं श्रीरुनेकवजनाः

स्वामी नमः

मरुतागतजाननामरुवृद्धवः
 ॥ ॥ अकथ्येति दियं न्यामः
 ५ ॥ उं अर्यवेनावनायसादा ॥
 उं अर्यायसादा ॥ उं नत्तमं
 रुवायसादा ॥ उं अमृतालयः
 सादा ॥ उं अमापसिद्धियसादा
 ॥ उं नावनायसादा ॥ उं मामवे
 सादा ॥ उं यायुनायेसादा ॥ उं
 तानायेसादा ॥ ॥ यजामातु ॥ ॥
 नावनादिवरुदवी मास्वतादि
 कथागरु ॥ संवृद्धावृद्धमावाध
 जायं कथ्यात्समादित ॥ उं यय
 सदाहृते सर्ववृद्धमहं रुवतु ॥
 ॥ जाय स्वात मयुसमतय ॥
 धूय ॥ अकथ्येति दियं न्यामः
 ॥ स्वातवाय ॥ उं जाकिषीय रुं
 रुद ॥ उं लास्यय रुं रुद ॥ उं यय

लाहं हं हं ॥ उं नृयागीय हं हं
उं वज्रक नाटक हं हं ॥ उं समय
क नाटक हं हं ॥ उं विस्मय क
नाटक हं हं ॥ उं समय विस्मय
क नाटक हं हं ॥ ॥ यूजा ला
स्या यथा वा ज न मुक्ति ॥ ॥
उं न मः श्रीव क से व नाय ॥ सह
हस्त संद रुज ग द र्थ य साध क
विष्णु म ती ड वी रुत श्री से व तं न
मा मुते ॥ ॥ त व य म न ॥ ॥
हं का व य न संद व हं का व सिद्धि
राज नं ॥ हं का व रु व शुच हं का
नाय रुत मा मुते ॥ २ ॥ त ना क
स ग ना स ॥ ॥ मं व व रु व य
यि ला पं व स ग स रुत न म न
म नु ग जाय क र्ण क ॥ ॥ मं व
सं व त य २ ॥ उं व ज म न द क ०

० हं ॥ त य २ म न क स हा ॥ उं म
आ कि ति ज न नृ य वि रु व ॥ ॥
॥ ॥ ॥ उं व टि कि व का व य
वि ल तं ना ना व त म यं क रं म मा
का व ज नृ य ध मा द या क व रु
वि रु व ॥ त द न स वी ज वि रु
य ति ला म न स स द व ता वि वि रु
स रु द्वि ज म य लां क (ने रु त स
स मा ती य य न ना रु व या या व म
ना दि कं रु ला द या त ॥ त व स म य
द व ता स न द व ता य व (म म ला
ना (ग म ड वी रु य वा धि वि रु व
या म ती रु त वि रु य त ॥ ॥
आ क र्ण ना दि य वं ना मं भा ज
व न ॥ उं स व त थ ग त म न क
(ग व न हं ॥ ॥ ॥ स व न व य
॥ उं व रु य क हं २ ॥ ॥ नि न

जनयाय ॥ ॐ आः वज्रयकसर्वथा
यविप्रिमानानरुस्मिं कनूकं रु
दसादा ॥ ॥ यकाः का मयक
॥ ॐ आः वज्रकर्मयचो केश
यकभा निंकनूकं रुदसादा ॥
मंयनंयनसय ॥ ॐ आः वजन
कसचो वज्रमस्त्रापनय रुद
दसादा ॥ ॥ कंचमस्तय ॥
ॐ आः वज्रसंधि सर्वयुहसुन
संलाना नूकं रुदसादा ॥ ॥
जाम्बलतय ॥ ॐ आः वजन २ काः
नय २ रुदसादा ॥ ॥ आनति
महत्तमथाः त्यादि ॥ ॐ ॥
धूयंकर्णात ॥ श्रीमत् श्री २ संयु
हकनसा चैव श्रीमत् श्री विगाध
यन महोका न नन्दिक येन वे
वाननवदेवता रुद्रनकस्य ॐ रु

गवन्तद्वज्रविद्यानाजंनमस्तु क
करुमिनुम्यहं ताथः मयुनं क
नूकात्मक ॥ भिष्याधमनकं य
ययुमाकं यूनतायव । तस्मै रु
कस्य रुमवयसा दंकरुमहसि ।
समन्वारुवं रुमा वृद्धा प्रमसा
दिह संसिता । वज्रमत्त रुमा वा
ये देवता कस्यया म्यहं ॥ ॥
आकं यो धादियुयं न्या म ॥ ॐ ॥
ॐ आर्यदेवा वनाय नमसादा ॥
ॐ अकात्याय नमः १ सादा ॥ ॐ
ॐ नत्त संरुवाय नमः १ सादा ॥
ॐ अमृतालाय नमः १ सादा ॥ ॐ
ॐ अमाय सिद्धिय नमः १ सादा ॥
ॐ नावनाये नमः १ सादा ॥ ॐ
ॐ मासये नमः १ सादा ॥ ॐ ॥
ॐ यायुनाये नमः १ सादा ॥ ॐ

रुद्राय स्वाहा ॥ उं धनं दाय स्वाहा ॥
उं धनं दाय स्वाहा ॥ ॥ पूजाः
साया ताउ ॥ तमस्तु वरुसुखाः
य वरुसुखाय तं तमस्तु वरुसुखाः
वरुसुखाय तमस्तु वरुसुखाः
॥ ॥ रुद्रं वयं नमं देव कार्यासि
द्विविनायक ॥ गारा (गं) वयं
पन्नं देहि मस्तु वयं देहि ॥ ॥
रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
॥ ॥ रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
॥ ॥ रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं

ऊनी जातं धेय वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
॥ ॥ रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
॥ ॥ रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
॥ ॥ रुद्रं वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं
वरुसुखाय तं वरुसुखाय तं

स्माद्यं वैश्वकं नमस्कृतं। कनकस्य
त्रिरुज नमस्कृतं यमिनी ॥ ॥
तस्य ॥ ॥ इकां संयमं देव
दि ॥ ॥ स थ स ता ॥ यथमा
॥ ॥ ॥ थया सिद्ध का
स्या युजा ॥ थया सिद्ध व युजा ॥
दव स नूय न जाय धूय त्रिगोः
नमस्तु तावदा सगुणनलाय ॥
॥ आर्क्यो मादि यूष्यं नमः ॥
भालमयुलथि न योतवा स नः
सिद्ध उजं स्वान चरि माधि ॥ ताः
यहा न देव स नूय न गोः ॥ ॥
स थ स ता ॥ वाक युजा ॥ देव
लिवलिविय ॥ ॥ यं का प्रधवा
यमयुले नं का प्रधवा अग्निमयुलेः
कं का प्रधवा मिश्र कया न आका
धय यहा जतं विचित्र ॥ कुरुः

स्वादियत्रियुत्रितं उं वं जां जिं वं
लोमां यां तां उं का न ऊं रथी धि ते यं
चामुतये च यदीयं नूयं निष्ठा यः
वाता रुजा युता मिता य वि सिने
नामा कनादिकं अरु न वरान व
हृदवा नूयं अरु न तं दवा य पत्रि
दरं इकां न ऊं मुकुं विलिया मुरु
हृदं पाता न स व हृदवा तोयं सय
क्रान्त समुद्रं यं वा मुतं अ क य
यत ॥ ॥ आर्क्यो मादि यूष्यं नमः
मः ॥ लोक पात्र या स्वा न वाय ॥
युजा तासा ता ॥ उं रु व स म स
मं रुग्म सं कल्प सं का य मि व स क
नलाय। लावता विक्रमा ता ॥ गुन
कनक नूमा मुरु हृद विरु म्ना
ः कुरु त र द वा म स क रिया नू क या
॥ तस्य ॥ उं नूय स नू ह

ॐ वदतास्ते। धर्मं ॐ सं ह्य कर्तुः
(धर्मं ॐ सं ह्य कर्तुः) (धर्मं ॐ विहा
नस्तु (धर्मं) ॥ मधुन (धर्मं)
स्वातन्त्र्यता ॥ वज्रघं ० वाज्रघः
यथा र्थं य (०) ॥ ॥ ॐ श्री १ श्री
मधुन सतगुणं वज्रघ सतकम
नाय सगुणकहा नावज्रघ सनेक
नाय नमः ॥ ॥ नमः सतगु ३
नमो नमः ॥ रुद्रा देवानां नमः सति
गुणं तार्थं यद्विदमः ॥ ॥ यस्याः
यस्याः किं न (धर्मं) नितात्मकं गत
त्वनत्वं यथा वायुनिकं यदुक्तं ध
का वा यस्याः नाविनदमीनाः
समर्थे। तस्मिन् नमः सति गीयं गु
नलसतकनाय नमः ॥ ॥
वन्द्यं वज्रसत्त्वं रुद्रघं वज्रगुणं
सर्वव्यापकं वक्तुं नाना रूपनयन

विमलरूपं न विमलं नमः
सं धर्मो धर्ममधिनां जिनगणः
गुरुगं मधुन वज्रघातो सत्त्वानं
दकसान्तं सतगुणं सतगुणं दहि
नां साकुरुता ॥ ॥ नमः सत
नूपानां जिनधर्मकनकं ॥ स
च वदन्तं यथेष्टं धर्मधर्मनम
मुते ॥ ॥ सर्वव्यापकं नमः
सर्वव्यापकं नमः सतगुणं
साकुरुता साकुरुता नमः सतगुणं ॥
॥ नमः सतगुणं नमः सतगुणं
रुद्रनामं नमः सतगुणं नमः
नमः सतगुणं नमः सतगुणं ॥ ॥
सर्वव्यापकं नमः सतगुणं
नमः सतगुणं नमः सतगुणं
नमः सतगुणं नमः सतगुणं ॥ ॥
नमः सतगुणं नमः सतगुणं
नमः सतगुणं नमः सतगुणं

सर्वविशेषाद्युक्तार्थकचक्र
स्वस्तिस्वाहा ॥ ॥ लोकयात्रा
दियुक्त्याम ॥ ॥ ॐ ॥
यत्तमस्त्याहा ॥ ॐ यमाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ वन्याय नमः स्वा
हा ॥ ॐ कवेनाय नमस्त्याहा ॥
ॐ अग्नये नमस्त्याहा ॥ ॐ
नेमस्त्याय नमस्त्याहा ॥ ॐ वा
युवेय नमस्त्याहा ॥ ॐ ॐ ॐ
नाय नमस्त्याहा ॥ यूजा नाहा
गा ॥ ॥ ॐ सुत्रयतिथे
वश्रुतिरुजाधिया रुव ॥ यमा
युगाधिया ॥ ॐ नेमस्त्याहा
माधिय ॥ नागाधिया वन्या
नागा ॥ वायुय वन्याधिय रुथाः
रुवनाय नाधिया ॥ ॐ ॐ ॐ

नाधियन्त्रमात्रु ॥ ॥ अरुगे
भादि ॥ ॐ समतादि ॥ ॐ ॥
अथकाश ॥ ॐ धन ॥ ॐ मन्त्रेखः
नहाय ॥ ॥ ॐ मन्त्रादकारि
वकिचुस्वाहा ॥ ॥ यवाय नास
युगा ॥ ॥ ॐ ऊरुमानस्य भूम
कनामन सगधयनिवाजस्यः
मासकरुत संयायका मन्त्रार्थ
ॐ वद्व ॥ ॐ यात्रु सर्व सुदन्तः
जिनसगा दवता रुमगाता मा
काकनामधिय रु सकलजन
यत्रिजातनकाथनावे यूजा ॥
गृह्णन्तु माकि विदधु यजगा
मरुजाय तजहं ॥ ॥ ॐ
सिमन्तया रुयावक ॥ ॐ रुगानि
ताउन ॥ ॐ सर्वपापविप्रिमा

नारुमिं कृत्तुः कुरुत्वाहा ॥ ५
त्र ३ ॥ ॥ कर्मसमाप्तये नमः ॥
हं प्रयत्नतवाहकस्य वेवत्स
मं च केच कसिय (ग) उ न थ र्थ
उजो वाहि यरु मया द वाधुः
कि कुरु हि मा न मया द कि द
यात्त गीय यचेत ममि य श्रीः
मं च न कान न भु ल उ य चे द
रु कुरु (न) य यचेत श्रीः
मं च ये ल भान मय ये वा म र
निधाने न वा न म भु ल स य
न यो यथि म कुरु य रु म हा
उरु न कुरु के म म हा य चे द
स श्री वा म हा द कि कुरु श्री म
रु धिया वि वि रु रु म वि नः
मा रु द द ना ति वा वि न रु म

न ना श्री उ म्म या (ग) य नी ल क र
प्र यथु य कि म नि धान ल ति क
य रु न श्री म धि क मा ल वा मि न
म धि म भु य म म क ना म स रु न
म हा द न वा य स रु मि ॥ ॥
प्र या दि ॥ ह मि वा यं य (थ) ॥
हं प्र मि रु य न य रु न रु न
ला रु ॥ ॥ इ को व द म वा रु
न ना ॥ इ म य रु रु न व रु य
न ना ॥ ॥ थ न म यः ॥
रु रु इ ति वा मि म म य रु क न
अं य म ना न यः व इ य मि न ना
वा मि म भु ल न का वा रु व यी ना
व ना रु न र्थ य रु य वी रु ति न रु
अ य म रु रु थ न श्री व रु स रु ना रु
क रु मी ति न रु म य मि वि रु ना रु

य॥ ॥ उं अ॥ अ॥ य॥ व॥ न॥ स॥ का॥ रा॥
 य॥ अ॥ य॥ या॥ य॥ य॥ कि॥ न॥ सा॥ रा॥ ॥
 उं व॥ क॥ त॥ क॥ सा॥ ॥ ॥ स॥ त॥ त॥ क॥
 उं स॥ च॥ र॥ थ॥ ग॥ त॥ का॥ य॥ वि॥ (॥ ध॥ न॥
 सा॥ रा॥ ॥ ॥ क॥ न॥ म॥ स॥ ख॥ न॥ रा॥ य॥
 उं वू॥ अ॥ कि॥ स॥ रू॥ ॥ ॥ य॥ व॥ न॥ व॥
 न॥ रा॥ य॥ ॥ ॥ आ॥ क॥ र्क॥ य॥ न॥ यू॥ र्ण॥ ना॥
 म॥ ॥ ॥ उं अ॥ अ॥ य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं
 क॥ सि॥ ता॥ य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं य॥ क॥ सि॥ ता॥
 य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं दी॥ क॥ का॥ ता॥ य॥ सा॥
 रा॥ ॥ उं स॥ म॥ क॥ का॥ ता॥ य॥ सा॥ रा॥
 उं मा॥ धि॥ रु॥ डा॥ य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं य॥
 रु॥ डा॥ य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं अ॥ मि॥ द॥ व॥ ता॥
 य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं क॥ का॥ क॥ ता॥ य॥ सा॥
 रा॥ ॥ ॥ नू॥ क॥ सं॥ वो॥ क॥ नि॥ जा॥ त॥

यो॥ क॥ व॥ रु॥ म॥ हा॥ क॥ ला॥ यो॥ गो॥ व॥ न॥
 य॥ रा॥ क॥ जा॥ अ॥ न॥ न॥ म॥ मु॥ रु॥ क॥ या॥
 ॥ ॥ क॥ यो॥ म॥ ॥ ॥ ध॥ न॥ रु॥ न॥
 आ॥ ध॥ न॥ या॥ य॥ म॥ न॥ ॥ ॥ श्री॥ सा॥
 रा॥ ॥ ॥ अ॥ २१ ॥ उ॥ ज॥ मा॥ न॥ का॥
 (॥ य॥ क॥ ॥ ॥ यु॥ कि॥ वि॥ न॥ द॥ स॥ मा॥
 ध॥ न॥ आ॥ रु॥ रु॥ द्वा॥ न॥ सा॥ दि॥ ॥
 घृ॥ क॥ या॥ रु॥ द्वा॥ ॥ ॥ अ॥ न॥ ॥
 क॥ आ॥ ध॥ नि॥ ना॥ स॥ या॥ रु॥ द्वा॥ शि॥ म॥ इ॥
 ल॥ य॥ क॥ ता॥ ॥ न॥ य॥ दि॥ व॥ घृ॥ ता॥ यू॥ रु॥
 क॥ आ॥ ध॥ य॥ व॥ रु॥ क॥ रु॥ न॥ ला॥
 य॥ क॥ वो॥ का॥ म॥ रु॥ धा॥ ना॥ य॥ या॥ त॥ न॥
 ॥ आ॥ क॥ र्क॥ य॥ न॥ यू॥ र्ण॥ ना॥ म॥ ॥
 य॥ व॥ न॥ थ॥ म॥ क॥ या॥ ॥ ॥ उं अ॥
 य॥ न॥ व॥ ना॥ य॥ सा॥ रा॥ ॥ उं अ॥ य॥

translate into English

8 9 bish

11 ch. 10



अक्रास्वापस्वाहा॥ तुं न त्वं स एवाय स्वाहा॥ तुं श्रीमिताहाय स्वाहा॥ तुं श्रीमा
द्यसिद्धिपस्वाहा॥ तुं श्रीवैताय स्वाहा॥ तुं मासकीयस्वाहा॥ तुं पाशुलाय
स्वाहा॥ तुं तानाय स्वाहा॥ ॥ प्रजानां स्वाहा॥ नमस्कृत्य च वृद्धानां श्री
ह्योदिकुलत्रयमध्यवेगयनं नाथं यश्च वृद्धनमामुहं॥ ॥ यनध्यान॥ नमो॥ इ
मिं मखनूकाभयद्वाराहलप्रमानं शुक्रवर्जविराजं॥ ज्ञान्वक्तृस्थिरश्रवणवद्वि
मखवक्त्रं मनुद्यतिश्रमघटाहूनिदद्यात्॥ ॥ तुं अस्वाहा॥ नमो कुरुते धनं
सुथनाश इय॥ ॥ समीधः अभयेन॥ ॥ तुं अत्रयस्वाहा॥ ॥

यस्वाहा॥ तुं न त्वं स एवाय स्वाहा॥ तुं श्रीमिताहाय स्वाहा॥ तुं श्रीमा
द्यसिद्धिपस्वाहा॥ तुं श्रीवैताय स्वाहा॥ तुं मासकीयस्वाहा॥ तुं पाशुलाय
स्वाहा॥ तुं तानाय स्वाहा॥ ॥ प्रजानां स्वाहा॥ नमस्कृत्य च वृद्धानां श्री
ह्योदिकुलत्रयमध्यवेगयनं नाथं यश्च वृद्धनमामुहं॥ ॥ यनध्यान॥ नमो॥ इ
मिं मखनूकाभयद्वाराहलप्रमानं शुक्रवर्जविराजं॥ ज्ञान्वक्तृस्थिरश्रवणवद्वि
मखवक्त्रं मनुद्यतिश्रमघटाहूनिदद्यात्॥ ॥ तुं अस्वाहा॥ नमो कुरुते धनं
सुथनाश इय॥ ॥ समीधः अभयेन॥ ॥ तुं अत्रयस्वाहा॥ ॥

[illegible][illegible]

ॐ वक्रमहाकायसादा ॥ सात ॥ ॥ ॐ वक्रकुरुमा नायसादा ॥ ज्ञाननमः ॥
॥ ॐ वक्र(वम)सातायसादा ॥ यमाय ॥ ॥ ॐ वक्र(वम)तवसादा ॥
रुति ॥ ॥ ॐ वक्रकनं वनायसादा ॥ कयनुनि ॥ ॥ ॐ वक्रमाकाः
यसादा ॥ तायन ॥ ॥ ॐ सचाथसिद्धयसादा ॥ नयका ॥ ॥ ॐ स
वक्रभयसमतायसादा ॥ पनका ॥ ॥ ॐ सचसपदसादा ॥ दधिनुः
दना ॥ ॥ ॐ वक्रप्रियं तमायसादा ॥ प्रीयंग ॥ ॥ ॐ सादधनरुता

यसादा ॥ भुकोतस्य ॥ ॥ ॐ साशिरुतायसादा ॥ शिरुता ॥ ॥ ॐ सा
सधुनछिं वनायसादा ॥ वयनस्य ॥ ॥ ॐ साशिरुतायसादा ॥ शिरुता ॥ ॥ ॐ सा
सर्वज्ञाहिरिंसादा ॥ व्यावृद्धय ॥ ॥ अग्निमिमात्र दहिनावह वाम
वहनडयका ॥ ॥ ॐ श्रीवक्रसत्वेनाष्टय ॥ ॥ ॐ वक्ररुतायसादा ॥
॥ यथमाहमिविय ॥ ॥ ॐ वक्रमानसम् ॥ सक्तुसरोपाककारार्थे क
सधुनतयसासेरुनिमिरुथं सकिवासादि ॥ ॐ ज्ञानयगादीयादि

य विवाविषयसहिष्य हवकववाहताय अऊमा न स्य भक्तिं कृत्वा यः
सिं कृत्वा प्रथमादृगिगृहं कृत्वा ॥ यन्मा तासा ताह ॥
नृकृत्वा विजातं वेधवर्हस हाहा नी विधात नम हं वन्द्य सर्वमं प्रतिः
वयक ॥ ॥ तथ्यन ॥ ॥ नि यथ सा कृति ॥ ॥ थन न न सा यन ॥
एव जाकत हा न सा इ सा यति यन क कि सा यन ॥ ॥ इ विद्या न क्ष न य
भने सा सा ॥ भ त लो य न हा य ॥ ॥ इ यं ज्ञां किं वं ॥ यं व ग य न हा य ॥

॥ नि यन सा यन ॥ ॥ तता भान ॥ तता व क ता य म सा य के हा हा हा ना हा
ह ना गि विहा व हा ता का ता ए नो य हा त क कि क म ल य ज्ञा म ना य मि म भु ता मि
य मि वी रु ति या न वि कृ वी रु य मि हा म हा म भु ता मि मि सु मा भु ल य मि वि हा य
ह न म ल व व जां कृ थां दि रि ना कृ य य व थ य ज्ञा म ना लो न नी ता मि व म म ल स
त म ह ॥ कृ था य मि य थ कृ था य या य न म ना दि कं कृ था कृ था ग ॥
सं व म या सा न वा य कृ थ स य्ज्ञा ता सा ता ह त या न ॥ ॥ स न म त न न य क

सस्यसु दक्षिणार्णोदिमिस्याह ॥ २ ॥ उं धर्मो वनाए विवसि मात्रं ग वनिक
यि न वञ्छा सिगार्णो वनं यति विवकाकि भाकि स्वस्य सु यत्रिगायां दिमिस्याह
३ ॥ उं सान्नेय नरु विवकाए वक्रनाजा न वन्द्री मय च्वे गयना एव कानि
वनं वकि विवकाकि भाकि स्वस्य सु उहेन सांदिमिस्याह ॥ ५ ॥ उं वञ्छ
कथाय वृक्षधन वक्र वक्रयाय वक्रधन सिन सा न जयल ॥ यति सय न
याय भाकिं स्वस्य सु दिन्विदि स्याह ॥ कोदायति ॥ १ ॥ क्रमक सावसि

[illegible]

दुन्दुभ्यानि यन्तु रुद्रा ॥ यूजा तासां गोशु ॥ जाकिनी च तथानामा खसुः
साहसवन्प्रियीतो । न्यस्य यूचादिभस्मस्तु मच्चामिद्विषयका ॥ ॥ थनमिः
चरु माहुरि भागंतय सकल्यं क्रियकं च कदा तय पचधमाज्ञाय ॥ ॥ भा
वाय्यदा नाद्वयनाकण । सविन्दविय ॥ ॥ गीतादिकाप्रयि ॥ स्यादा नगनना
कस्यं मान्साद्विषय ॥ ॥ अरुमानस्यमासक रुतसंज्ञा फिका मताथ क
नगमचन ॥ ॥ सुदवतायीति पूर्वक ॥ ॥ दंमान्साद्विगुट ॥ ॥ रुद्रासा ॥

यूजा तासां गोशु ॥ ॥ रुनां पचसासाद्विषय ॥ भागंतय पाशुह्वाय ॥
गीतादि अयं रवा ॥ विन्दु कत्यन ॥ ॥ भाद्विषय ॥ अरुमानस्य मास
क रुतसंज्ञा फिका मताथ कसंभा च न स्वसुदवतायीति पूर्वक ॥ ॥ दं पचसा
स्याद्विगुट ॥ ॥ रुद्रासा ॥ ॥ यूजा तासां गोशु ॥ ॥ ॥ विषय च सासा
द्विषय ॥ ॥ थनमि पंचसाविन्दुनक कथनं श्रीज्ञायत्रुतक थय संगः
याव मिषय फिका विनामरुत मतासु तानवा सचन मिषयाद्विगुट ॥

हियक वेदनका ॥ ॥ धनसि महावलिविय ॥ ॥ इतमधोपनी
कोय ॥ ॥ सेयस्यक ॥ ॥ यका नदवायमनुस धनारं नीसवहं तइयनिसका
नदा अनिमनुस सिका हीनकवहं ॥ तस्यापनि दूका नरुय सकारे वृत्ती को
यनि अकाननारां वृहृ कृती कडने विविन्यत करु स्यादियनि वनित ॥ ॥ इव
मां डिं खं सां मां पां ता ॥ इका नद रुदधी स्थिते पक्का मृते पक्कयदी ये नृपतिः
व्याघ वां तां रुका युलिका निशाय विविसि ते नामा नृगादिकं नरि नवराः

नवहं इवानयं क्षसितं तद्याप्ययविदार्तं दूका नरं शुक्रं विसिया मृगहरं या
तानमवहं इवानेत्ये संफलीनमसंयव येनामृते जाक वा गत ॥
मा याये ॥ ॥ इ सवहं लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ अमिता कुरु लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ न
नरे लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ वधु लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ का धरे लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ
इत्तनरे लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ कपातरे लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ ही वनरे लेवायः
स्वाहा ॥ ॥ इ सेहानरे लेवाय स्वाहा ॥ ॥ इ इ न वधाय नमस्वाहा ॥ ॥ इ व माः

[illegible]

इ न न धी व व अ थ का ध र हे ल वा उ न्न क र हे ल व च वे व क या स री ष न स्त थ ॥
 स ह न धी व व म्प र हे ल वा स न मा मु क ॥ ॥ व स म्प र ही म स द वी न्द्र य ॥
 नो त थि व व का मा न य र थ द वी वि ष्णु वी च न मा मु क ॥ वा ना ह्री व ग भ द ॥
 वी ॐ स य धी गे न स त्रि हा नि मा न्म का सि का द वी स ह न न्म न्म न म्प मु क ॥
 ॥ स थ म ग ॥ ॥ स वा रु ग भ य न य ॥ ॥ रु न म र्ही व रु स ला ॥
 य ॥ द वा स ना स व रु रु ङ्ग सि द्धा ता न्म स य र्हे १ क ट य र ता व ग भ द्वे य क

गुरुजातयव यकचिरुहोतिवसक्तिदिवा॥ १ ॥ न्यस्तकजातयवधि
वीस्तुनरुं कृर्गाऊलिशिविहययामिगामु। सयुजयत्रिसरुहृतसंधे श्रुत्वा
ॐ द्वाया मन्त्रगदार्थ॥ २ ॥ अथ मन्त्रयुः निवसक्तिदवा यमनयत्रसना
नयत्र। यवा दयास्तु न विमगुलेव न गलेषु सर्वेषु च यवसक्ति॥ ३ ॥
भनीलसमवाष्य संगमेषु नत्वा नया वापि कृता धिवासा। वापितला
नघृयल्लवयं कषय्यदोषेषु मदानदीष॥ ४ ॥ अथ मया घष्यचकान

[illegible]

रुतंशुगं॥ ८ + ॥ ॐ ह्यनन्वकी मरुदवसेधे निमंवल्लिगृह विधिंचरु
क्याअननेमरुहयतिथ आयेयतिवायधनाधियथ॥ ९ ॥ ॐ भान
हृणधियतिथदवारमरुद्ववडाकेपितामरुध। दवासमताहविथवनाम
धनाधनाशुचमामसमता॥ १० ॥ यतिवतिस्वकनिथदयति स्वकसकाव
दिभवहृते। गृहंरुहृदामवनाभ। भिन्ना भाकिंययिंचरुचेत्तुनित्ये॥ ११
॥ यस्मंवल्लिधयेचलितेव्यधंयनाधियति। शिवमनात्रथसा। रुजकुयी

वक्तुं प्रियं रुच्यं ॥ इदं यकमेव रुच्यं ॥ १२ ॥ चकवृकभभा नवापव
तक दयगृह्यमपाधयथकृष्य भर्त्यानां विभयतः ॥ रुच्यं नरुच्यं नरुच्यं
म्या मातंगभदि विभयतः ॥ १३ ॥ रुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं
रुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं
रुच्यं नरुच्यं ॥ १४ ॥ यथा नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं
नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं नरुच्यं ॥ १५ ॥

॥ ऊं कं का ॥ ८ ॥ इंद्रधर्मधर्मनाशदह २ सर्वविघ्नापमान्नाथं भक्तिकृत्तुवा
 सा ॥ चन्द्रयनि ॥ ९ ॥ इंद्रवज्रधृयनां स्वाहा ॥ १० ॥ इंद्रवज्राशोकदीप्ता
 सा ॥ दीप ॥ ११ ॥ इंद्रवज्रयिष्टिकाय स्वाहा ॥ यंत्रयन्त्रो ॥ १२ ॥ इंद्रवज्रयुग
 तां वृनाय स्वाहा ॥ वयस्वान ॥ १३ ॥ इंद्रवज्रसूत्रमस्ताय स्वाहा ॥ रुभ ॥
 सूत्र ॥ १४ ॥ इंद्रवज्रवीर्यकमाय स्वाहा ॥ वीर्यं नु ॥ १५ ॥ इंद्रसर्वनागा
 युधमस्ताय स्वाहा ॥ अथ अथ ॥ १६ ॥ इंद्रवज्रवर्मकनाय स्वाहा ॥ कर्म

१५ ॥ इंद्रसर्वनागाय स्वाहा ॥ सकयय ॥ १६ ॥ इंद्रवज्रवीर्यय स्वा
 हा ॥ सुमय ॥ १७ ॥ इंद्रसर्वकामकनीथ स्वाहा ॥ त्रयकर्मन ॥ १८ ॥
 इंद्रवज्रमदस्वाहा ॥ यस्या कर्म ॥ १९ ॥ इंद्रवज्रकर्मदस्वाहा ॥ मित्रनाहा ॥
 १२ ॥ इंद्रकर्मरसचकार्यसिद्धिदमाय स्वाहा ॥ कर्ममा ॥ २० ॥ मय २
 सर्वदवांशना स्वाहा ॥ कर्ण्यन ॥ २१ ॥ इंद्रवज्ररुद्रकस्वाहा ॥ नक्रचन्द्र ॥
 २२ ॥ इंद्रजयर्क्षरुद्रस्वाहा ॥ श्रीवसु ॥ २३ ॥ इंद्रिनथयदस्वाहा ॥ हा

सर्वकं ॥ २४ ॥ इति न त्वप्यदस्वाहा ॥ न सा चर्कं ॥ २५ ॥ इति सप्तमय सर्वभाः
नयस्वाहा ॥ अगुमि ॥ २६ ॥ इति स च संयोग सा धयदो यथि क्रनस्वाहा ॥
गुगुनी ॥ २७ ॥ इति कनिधनि सर्वक ममि सिद्धि क्रनस्वाहा ॥ आद रुन्ति ॥
२८ ॥ इति आरु क्रस्वाहा ॥ शिरुता ॥ २९ ॥ इति वजाय या स्वाहा ॥ इति का कस्य ॥
३० ॥ इति स चैय्य रुने इति आरु क्रस्वाहा ॥ सप्तम कसो ॥ ३१ ॥ इति काय कनः
हाय यना सप्तस्वाहा ॥ शिकरु ॥ ३२ ॥ इति स धन स्वाहा ॥ कसि सा स च
३३ ॥ इति न त्वप्यदस्वाहा ॥ न सा चर्कं ॥ ३४ ॥ इति स च क्रि न त स्वाहा ॥ न त्व

त्वाय ॥ ३५ ॥ इति यति रुने स्वाहा ॥ शिकरु ॥ ३६ ॥ इति स गे ध क्रि य स्वाहा ॥
यना न वं सूया ॥ ३७ ॥ इति जना क्रि य रु स्वाहा ॥ कमु ॥ ३८ ॥ इति स च नाग
यु स म नाय स्वाहा ॥ इति म क्रि न के रु क्रि य सा रु ॥ ३९ ॥ अथ यानि त त्व न स्वाहा
वरा ॥ ४० ॥ अथ न संख्या रु विवय ॥ ४१ ॥ इति दिगां स्व क्रि क लो दिव्यो मां ग ल्य वाथे
सा ध क अवसा स म नां सत्वा कर्त्तु य कि न रु नां ॥ इति धृष्ट ना य वि न रु क वि न

याकवेधवधानो न क्लृप्तकाम नार्थ यन्नय २ स्वस्ति स्वाहा ॥ १ ॥ चतुर्भुजा
क्रायात ॥ ॥ ह्रीं श्रीं जं वृद्धीय मधो राग ललित गय रुत प्राय्या वहं द (म
यथा रुमो कुरु सर्वे लोक कल्याणार्थ श्री वा मुद कि दा राग श्री वा मुद
मय कि श्रिता श्री वा मुद सर्वे लोक हृष सर्वे सृष्टि का मार्थ स्वस्ति स्वाहा ॥ २ ॥
दमयात ॥ ॥ कथां विना गच्छ मुक्त त्व स सुकृत आह्वय सो भव म न्नियरा
विक्रय ममेदा सत्ये न त मा मु कश्चि त् न भु म्भु त न्नु ज सं स्म क रं ता त स्मा दि द न त्व व

नय दी कं नृ कं न सत्ये न क्व च्च नु नित्ये ऊऊ मान स्य भु म्भु क ना म धिय य नृ यो ना
दि स ग दाय निवा न स्य श्री मत् श्री श्री भु म्भु क द व ता रु य न क स्य दि न ऊ ग्य सं य
हृ नि मि त्यर्थ क्व च्च नु स्वस्ति स्वाहा ॥ ३ ॥ क म्भ्या दा म्भु द व या त ॥
शे ग ना स्म ग न्धे चो कं रा यु स्य वि नृ क २ वि नृ पा क न्धे चो म तो वा य रु क भ भ
म हृ दि का रा क थां सर्वे य म रु त्या तां शु रि क म न्न सं धु र्द दि यो य ध न धा न्या दि
क्व च्च नु सर्वे य क्व र्द ऊऊ मान स्य भु म्भु क रु त का मार्थ सर्वे ता क या न स्य

स्वस्ति॥ ५ ॥ सकलजो कया नयात॥ ॥ यः शनिश्च विधिवत्तु काभिः
तं भासु सदा नृणां गवा रुका समाधिना तं न समा न विद्यतं वकाय मना द
यमाने दभीता तस्मादिदं न त्ववयवी तं च कन सत्येन ॥ सा मुख स्ति स्वाहा
२ ॥ सकलयातं ॥ ॥ यच्चन्द्रमण्डलं सितं सूर्यमण्डलं यत्कथं सना नय
मण्डलं येन तानां च वृद्धमण्डलं जायते मण्डलं यत्र ते सज्जन एव मण्डलं
सक्तिं सचैव दानां लकृकामार्थं ॥ दं द्यधीतं वल संघमत्वं न तं सत्यं ॥

तु स्वस्ति स्वाहा ॥ ६ ॥ चन्द्र सूर्यो यात ॥ ॥ यदि कृदभमदि कृ दवा कियः
ति सदा धर्मे वकाया विधयं कदा भक्तवत्ति दयाम्भवन न त्दिक (भम) सदा त का
रि कया ग (सं) धनं केलवा मा एका इ नो विद्यायना मल द्वि का वज्र पना क्रि दी व
शी काल कर्हि सदा वत्ता तथ भन्ता मल हागम यद्य कृत्तो मवव मधि वृजय
या दकि स्वर्भूक भीव पिगता चक कय मसा दवी वद्वा क्ति कना यका सनीति
सन सति सनी सिद्धयनी सना वता ऊजमान ए स चैता क कत्या दा का मार्थ

सचयवयस्वस्तिस्त्राहा ॥ १ ॥ सकस्यंदवयात ॥ ॥ श्रीवृद्धधर्मसं
 घादिं रुगवंतमस्तमृदि वेनागभावाधिसत्तादिं कामनासर्वसिद्धिदा श्री
 स्वयंरुह्यक्तं तदुसिचार्थसिद्धिदाधारुभदानयजेषु स्त्रितादवाङ्गिना
 गदम तसर्वदवतोकाय सुहिरुसकामार्थस्त्रिस्त्राहा ॥ ८ ॥ **वृद्धध**
 मसंघयात ॥ ॥ नयालेधमनिहसि संशुघाषदभायिता कायूतनग
 काजार्गो सोकताथनयाविता वसन्ति सचेसोका नो दीघायनागनासने

धंन्यादिधनसंचदि रुवंरुमंगससय कालवर्षेणुभयान्थ रुयाहुस्यवति
 महितिन्नातंमहात्मारु सुहिरुंरुवक्तुकुव वदुकीनयदागभावा वृक्षासर्व
 रुलसुता सचहिरुलसंयद कामार्थकउमानस मङ्गलशुक्तिरु कामार्थस
 स्त्रिस्त्राहा ॥ ९ ॥ युधिमातायात ॥ ॥ एमातुकधितदनायाना श्रीनाद
 सुधववक दनिउइरुगदीना सदमानाहिरुगविद सचेसत्तासमावाजा य
 यिधुद्विनिमंथला उऊमानसययुक्पणेजादि सुवहिरु कामार्थस्त्रिस्त्राहा ॥ १०

श्रीमू व न वीर श्रीमसाहदेव

श्रीमू व

॥ चोत्तमसदयमानधर्कः ॥

॥ २ सर्वेषां देवगानां हि हृगानां कृदिके विदमः
हृगनां (धर्म) मनाय गथाधर्मो कथायि च उगतामीत्ये सर्वे समाना गथाय म
सुव विभक्ति कायसहस्र विधस्तविस्तलिकृता भक्तविरुक्ता भया सर्वस्व
स्मिकानेवाति श्रीलालनायने महानगनाधियकि श्रीश्रीयुगायसिंहसाहस्य
खण्डययुगायवन्नमिद्विकामार्थस्वस्तिस्वाहा ॥ ११ ॥ श्रीनाकायाग ॥

॥ नकाशुक्यागतिविधिरुपायं कायनवाचामनसा द्वेवायि पृच्छद नियं सरुता

नकत्वा गथातद्विग्रह (गत) कथां ॥ १२ ॥ समस्तयायनामद्वयमाधर्कः ॥ ॥ श्रीवकायाः
समुत्सवस्तिस्वाहा ॥ १२ ॥ समस्तयायनामद्वयमाधर्कः ॥ ॥ श्रीवकायाः
यामदायाह अमृकनाम्नत विभुगयान्नवक्ति सदा मोखं मदिमिद्विरुत्तका
मार्थस्वस्तिस्वाहा ॥ १३ ॥ पुनवास्तयाग ॥ ॥ वातमर्गि ऊजमानस्यम

मृकनाम्नत पशुयोगादिसगद्यनिवाजार्थं भक्तकनीत्यनरुत्तवाकिं
न संयाफिकामार्थं देवताचारुदेवना नाहोमाखवत्तयदा नम्नीकथां स

खं वद्विष्णोऽन्यनिनासने याथाकामिदीपं यत्तु भूयत्तु भूयत्तु भूयत्तु भूयत्तु ॥
श्रीः स्मृत्कदवतारुद्यानकस्य दितजहसं यत्तु नितिमिल्लथं स्वस्ति स्वाहा ॥
१४ ॥ दानवक्रियाक ॥ ॥ थनति मत्तयत्तु माय यनमायकतय ॥

मद्वान्तकय ॥ समय भनाकय ॥ महावाद्य ॥ इजमाने स्रमकनामने
आयनाताहमेध्वया गुरुतसं यायिकामार्थ इधमजिनारुतमनावा
चित् गुरुमंगतसं यायिकामार्थ ॥ इंसस्वस्ति सावपनिमस्मि स्वस्ति कस्त

(स्मयवान्तवनादिस्वस्ति) सभास्तिनेष्वरुधेनगतत दवादिद्वननाहसत
कसादिदं नत्तवत्तयदीकं चकनसखेन ॥ इंसस्वस्ति ॥ ॥ स्वस्ति वाद्य ॥
स्यादि ॥ इजमाने स्रमकद्वलसं यायिकामार्थ कस्तमज्जेनधर्मभुवाग
ध्वनरुगमनकस्य वसेवधनदितजहसं यत्तु नितिमिल्लथं यत्तु इति यनय ॥
इंसस्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ यत्तु चककाय ॥ यज्ञा गोरु तय्यमभा ॥ ॥ वाक्य
ज्ञा ॥ इंसस्वस्ति विद्य ॥ सानककाने ॥ गुनयज्ञा ॥ दक्षिण ॥ कसायन ॥

सुखतकाने ॥ कृष्णारुषक ॥ आभिवाद ॥ ॥ वृद्धिद्वय ॥ (अथाकृतिविः
य ॥ ॥ अनेन रुषिमवदि हनेन वद्विद्वधायय ॥ अथगादि नितरुषा नुद
वामिवगावकि ॥ वृक्षमकमरुधन विष्टवायुमहावस ॥ कामदवद्विनिधि नः
वंदसुयुक्तमेनह ॥ युधिथामधन (धेव कवलेनयनरुथा धर्मनाज्ञाधमया
यगमधवासुनकि न्वना ॥ आयसिमभितदवाध प्रकनिष्ठतिवाभिनि ॥ मलनाज्ञा
स्त्रिनाथव निवोषधवभवहिर ॥ निवोषधनगिदवाध शुद्धावा (आयगाथ

॥ पुं ही घ स हे न वा य स्वा हा ॥ ५ पुं च न ड हे न वा य स्वा हा ॥ पुं का ध रे न वा य स्वा हा ॥
पुं उ न्त म क रे न वा य स्वा हा ॥ ४ ॥ पुं स ह न रे न वा य स्वा हा ॥ पुं उ य व ङ्ग स्वा हा ॥ पुं
वु ङ्गा य र ध्वे स्वा हा ॥ पुं न द्रा य धी य स्वा हा ॥ पुं का मा नी य स्वा हा ॥ पुं वि ष्व वी य स्वा
हा ॥ पुं वा ना ही य स्वा हा ॥ पुं ञ्जा य धी य स्वा हा ॥ पुं चा म न्द्रा य स्वा हा ॥ पुं म हा त
क्की य स्वा हा ॥ पुं सिं धि नी य स्वा हा ॥ पुं वां धि नी य स्वा हा ॥ ॥ सिं द्र लं ति क

॥ च न्द न न म ॥ स च न पृ थ्व पा व द्र या प ना ग न ॥ आ प दा ह ग ह नि ॥ ल क्मी ॥ स्त्रे
व कु सर्व दा ॥ ॥ ऊं का ॥ अ य न प न म व मु ना ना व कु पु र ग हि त ॥ द द मि
प न या रु क्पा व ति ग द्ग य थ स्त्र ॥ ॥ स्वा न का य ॥ मा व सी मा ध वी जा नी म र
अ न र्वे क् व ल व प क ना ग ङ्गा दि हिं रे सूर्य ना ह नं य धा मा लि का ॥ ॥ समय
॥ ने व य सर्व सूर्य क् खा क् ष स म वि तं ॥ न स न सा र ग य ना नि द द मि य न म य दा

स्वागता धर्मनामानां मदनाग समन्वितं ॥ दत्ता दत्त विनिर्मुक्तं कृतं त्वकनमि
तत्त्वा ॥ ॥ ध्यात्वा ध्यात्वा ॥ इकानयनं दत्तं दत्तान सिद्धिं हं जन ॥ इकान
हृदयं दत्तानं कुनमस्तु ॥ ॥ सकविय ॥ सुप्रकारं महा दीपः सर्वदुः
मिनायक ॥ सहाकारं नं ज्ञातिः दीपां यं प्रतिगच्छतां ॥ ॥ गायय ॥ म्
भीतागान् नृपं चन्द्रार्थकाध हेनवं उत्तमं हेनवं वंशेव ॥ कपाली हीषदासु

ध्याः सहानं नृपं वंशेव हेनवायनमस्तु ॥ ॥ वृक्षा यदी महा दत्ती नृपायः
धीतरथे ववः कामात्री च तथा दत्ती विदुर्वीचनमस्तु ॥ वाना हीच तथा दत्ती ॥
आय विगो नि सं निरा निर्मास कालिका दत्ती महा लक्ष्मी नमस्तु ॥ ॥





1815

[illegible]

1827

good forms
for the benefit of all)

ad forms

for the selfish interests of the ruling

power is

- Monarchy / Tyranny